श्रावक धर्म

गृहस्थ जीवन के चार पुरुषार्थ बताए गए हैं - धर्म , अर्थ, काम और मोक्ष । धर्म गृहस्थ जीवन का पहला पुरुषार्थ है। गृहस्थ जीवन अर्थ और काम के बिना नहीं चल सकता लेकिन उस पर धर्म का नियंत्रण रखकर मोक्ष मार्ग पर चला जा सकता है। धर्म जीवन का मूल हैं। धर्म अर्थ और काम तीनों का सम्यक् समायोजन होना चाहिये तभी जीवन सार्थक है। यह शरीर अनित्य है, ऐश्वर्य नाशवान है अत: गृहस्थी को सम्यक् जीवन जीना चाहिये। एक अच्छे श्रावक के जीवन में किन बातों का समावेश होना चाहिए इसका वर्णन हम कर रहे हैं।

श्रावक

जो श्रद्धावान, विवेकवान एवं क्रियावान है वह श्रावक है। पंचपरमेष्ठी का भक्त, प्रधानता से दान देने वाला, पूजन करने वाला और भेदज्ञान रुपी अमृत को पीने की इच्छा रखने वाला श्रावक कहलाता है। श्रावक तीन प्रकार के होते हैं :-

१. **पाक्षिक श्रावक :** जो सम्यक्त्व सहित अष्ट मूल गुणों का अभ्यास करता है वह पाक्षिक श्रावक है।

२. **नैष्टिक श्रावक :** जो यथा योग्य प्रतिमाओं का पालन कर विशुद्ध परिणामों से संयत स्थानों को छूता है वह नैष्टिक श्रावक है।

३. **साधक श्रावक :** जो श्रावक आनन्दित होता हुआ जीवन के अंत समय समाधिमरण करता है वह साधक श्रावक है।

श्रावक के लक्षण

श्रद्धा और विवेकयुत, क्रिया सहित जो होय।
श्रावक वह कहलाता है, तीनों बिन नहिं कोय॥

श्रावक के षट् कर्म

जिनवर पूजा गूरु की भक्ति, शास्त्र श्रवण संयम तप दान।
षट् आवश्यक कर्म प्रतिदिन, भक्ति भाव से करो सुजान॥

श्रावक के अष्ट मूलगुण

प्रथमहिं पंच उदम्बर फल, वा मद्य मांस मधु तीन मकार।
त्रस जीवों का संकल्पी वध, बिन छाना जल निशि आहार॥
इनको त्याग करो जिन दर्शन, यही मूल गुण अष्ट प्रकार।
धारण कर श्रावक कहलाता, इन बिन जैनी को धिक्कार॥

श्रावक के मुख्य बाह्य चिन्ह

निशि का भोजन बिन छाना जल गहे नहीं सम्यक् मतिमान।
करें नित्य श्री जिन के दर्शन, बाह्य चिन्ह जैनी के जान॥

१. नित्य देव दर्शन करना २. पानी छान कर पीना ३. रात्रि भोजन का त्याग करना